International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 03(I), July - September, 2023, pp. 141-152

नवलगढ़ में विरासत संरक्षण एवं पर्यटन विकास का एक भौगोलिक अध्ययन

प्रवीण*
डॉ. सुरूची पचौरी**

सार

झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील एक पर्यटन संभावित क्षेत्र हैं यहां विभिन्न ऐतिहासिक स्मारक, गढ़, हवेलियां मंदिर आदि दर्शनीय स्थल हैं किन्तु यह क्षेत्र पर्यटन के क्षेत्र में अपेक्षित विकास नहीं कर पा रहा है। नवलगढ़ तहसील के पर्यटन क्षेत्र को विकसित करना अति आवश्यक है, जिससे नवलगढ़ सामाजिक और आर्थिक लाभों में आगे बढ़ सके, तथा पर्यटन की दृष्टि से सर्वांगीण विकास की ओर उन्मुख हो सके। समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, लोक कलाओं तथा प्राकृतिक सौन्दर्य से युक्त नवलगढ़ में पर्यटन विकास की प्रबल संभावनाएं विद्यमान है, किन्तु पर्यटन तथा इससे संबंधित अन्य क्षेत्रो की अनेक बाधाओं व चुनौतियों की विद्यमानता के कारण नवलगढ़ विश्व पर्यटन की तुलना में अपेक्षित प्रगति नहीं कर पा रहा है। नवलगढ़ तहसील में पर्यटन के महत्व को देखते हुए पर्यटन के क्षेत्र में विद्यमान बाधाओं को दूर करने के लिए यथासम्भव प्रयास किये जाने चाहिए।

शब्दकोशः *नवलगढ़ तहसील, विरासत संरक्षण, पर्यटन, आधारभूत सुविधाएं सर्वांगीण विकास।*

प्रस्तावना

झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील में हमें हमारे पूर्वजों से ऐतिहासिक, पारम्परिक, शताब्यिों पुरनने राजप्रासादों, हवेलियों, दुर्गों मकानों आदि के रूप में बहुमूल्य विरासत प्राप्त हुई है। उसके मूल स्वरूप को नही बदलने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी आज हम नवलगढ़वासियों की ही है। परन्तु हम अपना इस महत्वमपर्ण जिम्मेदारी को भुलाकर धन लोतुपता में फंस कर उन पुरातात्विक धरोहरों में होटल तथा एम्पोरिम, सोविनियर शॉप आदि खोलकर उन विशेष प्राचीन विरासत के मूल स्वरूप को भूलते जा रहे हैं तथा उनका व्यसायीकरण तथा होटलकरण करते जा रहे है। प्राचीन भवन जिस शैली में बने हुऐ थे सजे हुए थे आज उन्हें होटलीकरण किए जाने के साथ–साथ अन्दर से देशी विदेशी पर्यटकों की मांग के अनुरूप भारी फेरबदल कर पर्यटकों के अनुरूप बनाया जा रहा है जिससे उस पुरातत्व विरासत का मूल स्वरूप बदल रहे है तथा कई भवन, कई हवेलियां है जिनके साथ इस व्यवसायीकरण के दुष्प्रभाव भलीभांती झलक रहे है तथा अपनी दुःखद कहानी सुना रहे हैं। इस प्रकार नवलगढ़ तहसील के पर्यटन उद्योग को वर्तमान एवं भावी चुनौतियों का सामना करने के लिए एक प्रभावशाली व्युह रचना का निर्माण आवश्यक है तथा यहां के दूर्ग, हवेलियों, तालाबों व बावड़ियों को सहेजने की आवश्यकता है। ईमानदारी से प्रयास करने तथा दीर्घकालीन नीति का निर्माण करने से नवलगढ़ तहसील के पर्यटन उद्योग को आगे बढ़ाया जा सकता है। इससे न केवल नवलगढ़ तहसील की अर्थव्यवस्था मजबूत होगी बल्की झुंझुनूं जिला राजस्थान के पर्यटन उद्योग में अपना वर्चस्व स्थापित कर सकेगा।

---

* शोधार्थी, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश।
** पर्यवेक्षक एवं सहायक प्राध्यापक, सामाजिक विज्ञान विभाग, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम विश्वविद्यालय, इन्दौर, मध्य प्रदेश।

साहित्य पुनरावलोकन

आर.के.दुलार ने अपनी पुस्तक ''राजस्थान में पर्यटन उद्योग'' (कला एवं संस्कृति) 2007 में पर्यटन को एक सही परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करते हुए उसके वर्तमान परिदृश्य और भावी दिशा सूचकों पर प्रकाश डाला है। जिसमें राजस्थान में पर्यटन व्यसाय की स्थिति तथा राज्य के विकास में पर्यटन उद्योग की भूमिका को स्पष्ट किया है साथ ही साथ राज्य में पर्यटन विकास की भावी सम्भावनाओं को भी इंगित किया है।

राजेश व्यास ने अपनी पुस्तक ''पर्यटन उद्‌भव एवं विकास 2010'' में इन्होंने पर्यटन के उद्‌भव एवं विकास, पर्यटन प्रेरणा पर्यटन उद्योग के प्रमुख अवयव पर्यटन की आधारभूत सुविधाओं एवं राज्य के विभिन्न स्तरों पर पर्यटन के प्रभावों को सरल रूप से समझाते हुए बताया है कि तीर्थाटन से प्रारम्भ पर्यटन की सोच में अब पर्यटन के नये रूप विवाह पर्यटन, सम्मेलन पर्यटन, साहसिक पर्यटन, क्रूज पर्यटन, भू–पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन जुड़ चुके हैं। पर्यटन अब घूमने फिरने की क्रिया मात्र नहीं रह गया है बल्कि यह विदेशी मुद्रा अर्जन का सबसे बड़ा स्त्रोत, सर्वाधिक रोजगार देने वाला प्रमुख उद्योग है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

- झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील में विरासत संरक्षण एवं पर्यटन विकास की वर्तमान स्थिति का भौगोलिक आंकलन करना।
- नवलगढ़ तहसील में प्राचीन हवेलियों, किलों, मन्दिरों तथा उनके भित्तिचित्रों का अध्ययन करना।
- नवलगढ़ तहसील की जर्जर होती हवेलियों व अन्य स्मारकों की तरफ सरकार तथा समाज के सभी वर्गो का ध्यान आकृष्ट करना जिससे इनकी सार संभाल हो सके।
- झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील के भौगोलिक स्वरूप एवं इस क्षेत्र के ऐतिहासिक, पुरातात्विक एवं धार्मिक पर्यटन स्थानों की विवेचना करना।

शोध की परिकल्पना (Research Hypothesis)

- झुंझुनूं जिले की नवलगढ़ तहसील में आधारभूत आवयकताओं का विकास किया जाए तो नवलगढ़ तहसील में पर्यटन उद्योग के विकास की बहुत सम्भावनाएं हैं। इससे यहां के स्थानीय निवासियों की आय में भी वृद्धि होगी।
- पर्यटन क्षेत्र का विकास करके नवलगढ़ तहसील के छोटे स्तर के पर्यटन उद्योग को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विकसित किया जा सकेगा तथा नवलगढ़ तहसील के पर्यटन स्थलों एवं विरासत को भी संरक्षित किया जा सकेगा।

शोध योजना एवं शोध प्रविधि (Research Design and Methodology)

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए प्राथमिक आंगडें जो पूछताछ, सर्वे तथा द्वितीयक स्त्रोतों द्वारा इकट्ठे किए गए हैं। द्वितीयक आंकड़ों के स्त्रोतों में पर्यटन विभाग के दस्तावेजों, पत्र– पत्रिकाओं, अखबारों, पुस्तकों, सन्दर्भ सामग्री आदि शामिल किए गए। द्वितीयक समंको का संकलन राजस्थान पर्यटन विभाग, झुंझुनूं विकास निगम, जयपुर विकास निगम, क्षेत्रीय पर्यटक कार्यालयों एवं अन्य सरकारी, गैर सरकारी कार्यालयों तथा गैर सरकारी संगठनों से किया गया है।

भौगोलिक स्वरूप

नवलगढ़ 27^0 52′ उत्तरी अक्षांश एवं 75^0 17′ पूर्वी देशान्तर पर स्थित है। प्रदेश की राजधानी जयपुर से यह 145 किलोमीटर एवं जिला मुख्यालय झुंझुनूं से 37 किलोमीटर की दूरी पर झुंझुनूं के दक्षिण पश्चिम में स्थित है। नवलगढ़ की माध्य समुद्रतल से औसत ऊँचाई 385 मीटर है। शहर की भौतिक संरचना समतल है। पानी के उचित प्रवाह के लिए कोई विशेष ढ़लान नहीं है। अधिकतर पानी शहर के मध्य स्थित निचले क्षेत्रों में जमा हो जाता है। शहर के उत्तर–पूर्व में उदयपुर–लोहागढ़ की नदी स्थित है जो पश्चिम से पूर्व की तरफ बहती है परन्तु यह प्रायः सुखी रहती हैं। यहाँ पर सतही जल उपलब्ध नहीं है अतः पानी के लिए मुख्यतयाः भूजल का प्रयोग किया जाता है जो बहुत गहराई पर उपलब्ध है।

धार्मिक, ऐतिहासिक एवं धरोहर स्थल

यहाँ पर ठाकुर नवलसिंह जी द्वार बनवाया गया बाला का किला है। परन्तु अब यह अवशेष मात्र है तथा इसममें सब्जी मंडी एवं अनेक आवासीय मकानों का निर्माण होने के कारण किले का स्वरूप लुप्तप्रायः है। किले के एक भाग में गोलाकार गुम्बद निर्मित है जिसकी दीवारों पर कांच एवं सुनहरी चित्रकारी के साथ भित्ति निर्मित है।

एक अन्य किला फतेहगढ़ या काछियागढ़ का निर्माण 18वीं सदी के अन्तिम चरण में हुआ जिसके चारों तरफ ऊँची मिट्टी की दीवार बनायी गयी। परन्तु कालाल्तर में यहाँ लोग कब्जा कर व्यापारिक एवं आवासीय रूप में प्रयोग करने लगे और इसका स्वरूप लुप्त हो गया हैं।

नवलगढ़ अनेक प्राचीन मन्दिर हैं जो यहाँ के राजाओं एवं सेठों के योगदान से निर्मित किये गये जिनमें गोपीनाथ मन्दिर, कल्याण मन्दिर, गंगामाता मन्दिर, लक्ष्मीनाथ मन्दिर, घेर का मन्दिर अपनी वास्तुशिल्प एवं भव्यता के लिए प्रसिद्ध है। इन मन्दिरों का भी रख–रखाव नहीं हो पा रहा हैं।

विरासत संरक्षण एवं पर्यटन

नवलगढ़ सेठों की नगरी के नाम विख्यात हैं। जहाँ के व्यापारी वर्ग देश के बड़े–शहरों में अपना व्यापार करते हैं। इन सेठों द्वारा नवलगढ़ में अनेक हवलियाँ एवं मन्दिरों का निर्माण कराया गया है जो अपनी कलात्मक वास्तुशैली के लिए प्रसिद्ध है। यहाँ की विशाल हवेलियाँ हिन्दु व इस्लाम शैली के एक मिल–जुले रूप के वास्तुशिल्प का प्रतिनिधित्व करती है। इनकी निर्माण कला मध्य ईरान से भारत आयी और ''हवेली'' शब्द भी ईरानी भाषा का ही एक शब्द है। अधिकतर हवेलियाँ वर्ष 1860 से 1930 के बीच बनी। इनके निर्माण में चुने एवं पत्थर का उपयोग हुआ तथा चित्रकारी के लिए प्राकृतिक रंगों के साथ कालान्तर में रासायनिक रंगों का भी प्रयोग किया गया है। राजस्थान के क्षेत्रीय कलाकारों ने इसमें अपनी कला के रंग भित्ति चित्रों के माध्यम से दर्शाये है तथा इन हवेलियों को विभिन्न विषयों पर आधारित चित्रों से सजाया भी है। अपनी इन्ही विशेषताओं के कारण शेखावटी आधुनिक पर्यटज जगत में ''ओपन एअर आर्ट'' गैलेरी के नाम से प्रसिद्ध है। इन हवेलियों के साथ–साथ वास्तुकला का उपयोग कर यहाँ विशाल मन्दिरों, छतरियों, कुओं एवं धर्मशालाओं के निर्माण भी करवाये गये।

अधिकांश हवेलियाँ बीसवीं सदी में निर्मित की गयी। इन हवेलियों के भवन निर्माण शिल्प एवं भित्ति के बहुत ही आकर्षक एवं रमणीय है। नवलगढ़ में ऐसी हवेलियों की संख्या बहुत अधिक है। राजस्थान के पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा कराये गये सर्वेक्षण के अनुसार यहाँ करीब 200 हवेलियाँ हैं।

इन हवेलियों के स्वामी मारवाडी परिवार पूर्व में कई पीढ़ियों तक यहाँ आकर शादी, विवाह, मुण्डन, यज्ञ आदि कार्य करते रहे लेकिन बाद में इनका आना कम होता गया, जिसके फलस्वरूप इनके रख–रखाव में बहुत कमी आयी। इनमें से अधिकतर हवेलियाँ बन्द पडी है जिसमें चौकीदार या किरयेदार रह रहे है। इनके आस–पास खुले क्षेत्र में अनाधिकृत निर्माण होने के कारण इनकी सुन्दरता नष्ट हो रही है। इनके साफ, सफाई आदि की कोई व्यवस्था नहीं है। तथा निरन्तर जर्जर अवस्था को प्राप्त हो रही है। घेर का मन्दिर, गंगामाता मन्दिर, गोपीनाथ मन्दिर आदि भी रख–रखाव के अभाव में अपना स्वरूप खोते जा रहे हैं।

मुरारका फाउंडेशन के सहयोग से प्रतिवर्ष फरवरी में यहाँ शेखावटी उत्सव आयोजित किया जाता है। इस मेले में शेखावटी के कला एवं संस्कृति का दृश्यावलोकन कराया जाता है। जिसमें यहाँ के कलाकारी अपनी कला का प्रदर्शन करते है। सुर्य मण्डल स्टेडियम में मुख्य कार्यक्रम आयोजित किए जाते है जिनमें खेल, नाटय एवं संगीत कला तथा शेखावटी के कारीगरों द्वारा पथ निर्मित वस्तुओं की प्रदर्शनी आयोजित की जाती है। मेले के समय नवलगढ़ में बहुत चहल–पहल एवं सजावट रहती है।

मुरारका फाउंडेशन के अनुसार पर्यटकों के देखने के लिए शहर में निम्न मुख्य स्थल पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

- रूप निवास वैलेस (केवल एक भाग) होटल के रूप में
- मोरारका डवेली संग्रहालय
- भगत हवेली
- पेद्दार हवेली संग्रहालय
- पटोदीयों की हवेली
- चोखनी हवेली
- डकाइंची हवेली
- कूलवाल हवेली
- सेकसरिया हवेली
- छोछरिया हवेली
- गोयनका चार हवेली
- आठ हवेली
- मोरी हवेली
- घूत हवेली
- ग्रैंड हेवली– विराशत होटल
- गंगामाता मन्दिर
- घेर का मन्दिर
- कल्याण जी का मन्दिर
- गोपीनाथ मन्दिर

विगत कुछ वर्षों से शेखावाटी में पर्यटन को बढ़ावा देने के प्रयास किये जा रहे है एवं यहाँ के किले एवं हवेलियों का विरासत होटल के रुप में विकसित किया जा रहा है। नवलगढ़ में रूप निवास पैलेस को हेरीटेज होटल का रुप दिया गया है। इसी प्रकार ग्रैड हवेली का भी विरासत होटल के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। पोद्भार हवेली एवं मोरार्का हवेली को संग्राहलय का रूप दिया गया है। ऐसे ही प्रयास अन्य कुछ महत्वपूर्ण हवेलियों के लिए भी किया जाना आवश्यक है। वर्तमान में पर्यटन स्थ्लों के आस–पास की सफाई, अनाधिकृत निर्माणों को हटाना तथा भवनों के मरम्मत आदि कार्य किये जाने की आवश्यकता है।

तालिका 1: झुन्झुनूं जिले में पर्यटकों की संख्या–2010

वर्ष	स्वदेशी पर्यटक	विदेशी पर्यटक	योग
2001	76446	33751	110197
2002	83874	17401	10125
2003	84085	26528	110613
2004	90666	42882	133548
2005	92680	50604	143284
2006	104487	44904	149391
2007	102091	44685	146776
2008	101139	45913	147052
2009	100508	41820	142328
2010	115577	54871	170448
2011	133151	43623	176774
2012	128283	42718	171001
2013	86996	41967	128963
2014	323953	54254	378207
2015	96089	34413	130502
2016	179667	24477	204144

स्त्रोतः मुरारका फांउडेशन, नवलगढ़

नवलगढ़ में पर्यटकों की संख्या में विगत वर्षों में निरन्तर वृद्धि हो रही है। यह यहाँ पर हो रहे प्रचार एवं पर्यटन विकास सम्बन्धित कार्यों से सम्भव हो रहा है। नवलगढ़ में पर्यटकों के आवास की सुविधा कम है केवल रूप विलास महल एवं ग्रांड हवेली ही विरासत होटल के रूप में काम में ली जा रही है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर अन्य छोटे स्तर के होटल है। उन होटलों से प्राप्त रचना के अनुसार प्रतिवर्ष–करीब 10,000 विदेशी पर्यटन नवलगढ़ में ठहरते हैं। यहाँ अधिकांश पर्यटक केवल मंडावा, चुरु, झुंझुनूं आदि से दिन–में–भ्रमण के लिए आते हैं तथा रात्रि विश्राम यहाँ नहीं करते। झुन्झुनूं जिले में प्रतिवर्ष करीब 46,000 विदेशी पर्यटक आते है जिनमें से 70 से 80 प्रतिशत पर्यटक नवलगढ़ में केवल हवेलियाँ देखने आते है। इस प्रकार नवलगढ़ में प्रतिवर्ष 30 से 35 हजार विदेशी पर्यटक आते है। तालिका 1 में झुन्झुनूं जिले में आने वाले पर्यटकों की संख्या दर्शायी गयी है।

अतः नवलगढ़ में पर्यटन उद्योग के विकास की विपुल सम्भावनाएँ हैं। परन्तु यहाँ पर पर्यटक सुविधाओं का नितान्त अभाव है। आवास की कमी, दर्शनीय भवनों एवं स्थलों को जाने के लिए सुलभ एवं सुगम यातायात का अभाव, भवनों के पास गन्दगी, सड़कों की खराब दशा एवंज न सुविधाओं का अभाव, वाहन पार्किंग की समस्या आदि के कारण यहाँ पर अधिकांश पर्यटक रात्रि विश्राम नहीं करते, जिससे नवलगढ़ शहर को आर्थिक लाभ से वंचित रहना पड़ता है। पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए कुछ हवेलियों में गेस्ट हाऊस एवं हैरिटेज होटल बने हुए है। जिसमें ग्रेंड हवेली प्रमुख है। इसके अतिरिक्त यहाँ पर 6 छोटे होटल, 7 धर्मशाला तथा 5 अतिथिग्रह है। पर्यटकों के रहने के लिए ''स्टार होटल'' यहाँ नहीं है।

विरासत संरक्षण एवं पर्यटन

नवलगढ़ में सवा सौ साल पहले बनी हवेलियाँ अपने पराम्परागत एवं कलात्मक भित्ति चित्रों (फैस्कोज) उत्किर्णित विशाल दरवजों, अलंकृत मेहरावों एवं भव्य आकारों के कारण देश–विदेश के पर्यटकों का मन मोह लेती है। इन हवेलियों के भित्ति चित्रों के कारण ही इन्हें ओपन एयर आर्ट गैलेरी का नाम दिया गया हैं तथा वे शेखावाटी की सांस्कृतिक विरास्त के रूप में विश्व प्रसिद्ध हैं। हवेलियों के अलावा भी नवलगढ़ में अनेक मन्दिर, छतरियाँ, जोहड (तालाब) कूँवें आदि भी अपने कलात्मक स्वरूप के रूप में विद्यमान है। उक्त विरासत स्थलों का बनाये रखना शहर की मुख्य समस्या हैं। क्योंकि वे पर्यटकों के आकर्षण के मुख्य केन्द्रबिन्दु है। इनके उचित संरक्षण से नवलगढ़ में अधिक से अधिक पर्यटक इनकी–ओर आकर्षित होंगे तथा यहाँ के पर्यटन व्यवसाय को बढ़ावा मिलेगा।

नवलगढ़ के मुख्य विरासत स्थल

नवलगढ़ के मुख्य विरासत स्थल निम्न तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किये गये है।

- हवेलियाँ
- मन्दिर
- छतरियाँ जोहडें एवं कूवें

हवेलियाँ

नवलगढ़ के धनाढ़य व्यापारियों ने देश के बड़े–बड़े शहरों में जाकर अपनी व्यापारिक क्षमता के अनुरूप अपना व्यापार बढ़ाया एवं धन अर्जित किया। इन धनाढ़य व्यापारियों ने अपने पैतृक स्थानों पर अपने निवास के लिए भव्य हवेलियों का निर्माण कराय। इन हवेलियों में मारवाड़ी परिवार अपने पारिवारिक संस्कारों जैसेः मुण्डन, जनेऊ, शादी, यज्ञ आदि पर आते थे। परन्तु बाद में इनके आने का क्रम होता गया। इन हवेलियों के निर्माण में पारस्परिक स्पर्धा के कारण विविध चित्रकारी की गयाी तथा एक दूसरे से बढ़–चढ़कर बनवायी गयी।

हवेली सामान्य रूप में एक आवासीय भवन है जिसमें एक चौक (खुला आंगन) के चारों तरफ बरामदे एवं कमरे बने होते है। अधिकांश हवेलियों में एक बाहरी एवं अन्दर का कूल दो चौक होते है। हवेली का मुख्य दरवाजा तोरण द्वार कहलाता है जिससे प्रवेश करने पर बाहरी चौक आता है जिसमें दोनों तरफ बैठक के रूप में बरामदे युक्त कमरे होते है यह बाहर से आने वाले अतिथि का स्वागत कक्ष एवं बैठने का स्थान होता है।

इसके आगे एक अन्य दरवाजे से भीतर जाने पर आन्तरिक कक्ष में प्रवेश मिलता है। आन्तरिक कक्ष के चारों तरफ कमरे या ''साल'' बने रहते है। इसी चौक में एक तरफ ससोई घर और परिण्ठा (पानी का कमरा) बना रहता है तथा एक छोटे कमरे में गृह देवता की मूर्ति या चित्र रहता है। चौक के बीच में एक छोटा सा तुलसी चब्बुतरा बना रहता है। हवेली में दुसरी मंजिल पर अपेक्षाकृत बड़े कमरे होते है। इसके अलावा हवेली के साथ ही छोटा स्थान जिसे नोहरा कहते है। पालतु जानवरों, नौकरें आदि के लिए होता है। नोहरा हवेली का अभिन्न अंग होता था जो हवेली के मुख्य दरवाजे के समीप ही एक अलग दरवाजे से जुड़ा हुआ रहता था इसमें खुले स्थान के साथ कुछ कमरे भी बने रहते थे।

हवेली की बनावट उसके स्वामी की सम्पन्नता पर निर्भर करती है। हवेलियाँ एक चौक, दो चौक, तीन चौक या चार चौक की होती थी। बाद में पारिवारिक संरचना के अनुसार कुछ हवेलियाँ एक से जुड़ी हुई बनायी गयी। जैसे दो हवेली, चार हवेली, छः हवेली, आठ हवेली आदि। हवेलियाँ एक बन्द गली (कंल की सैक) के दोनों तरफ बनवायी जाती थी।

इन हवेलियों के दरवाजों पर नक्काशी की बेजोड़ कारीगरी की गयी है तथा प्रवेश द्वार पर भी आकर्षक चित्रकारी की गयी है। अन्दर की दीवारों को भित्त चित्रों (फेस्कोज) से सजाया गया हैं। भित्त चित्रों में देवी, दवताओं, राजपुतों की वीर गाथाओं, तीज एवं गणगौर उत्सव आदि को प्रदर्शित किया गया। चित्रकारी के लिए रंगों में स्थानीय वनस्पतियों एवं खनिज पदार्थों का प्रयोग होता था परन्तु बाद में रासायनिक रंगों का भी प्रयोग होने लगा। भित्त चित्रों के साथ ही उभरी हुई कलाकृतयों द्वारा भी हवेली की दीवारों को सजाया गया। इसके अलावा शीशे के फ्रेम में भी चित्र बनाये गये। उक्त सभी चित्रकारी शेखावाटी के ही कारीगरों द्वारा की गयी इसी कारण से यहाँ पर आज भी ऐसे खानदानी कारीगर मौजूद है।

नवलगढ़ में राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा कराये गये सर्वेक्षण के अनुसार करीब 200 हवेलियों को चिन्हित किया गया है। जिनमें कुछ प्रसिद्ध हवेलियाँ निम्न हैः—

- **डंगाइची हवेलीः** इसका निर्माण 1890 में किया गया था यहाँ भित्ति चित्र महत्वपूर्ण है, जिसमें मोर के ऊपर विराजमान सरस्वती एवं अन्य देवी देवताओं के चित्र आकर्षण का केन्द्र है।
- **मेरारका हवेली संग्रहालयः** यह हवेली करीब 1900 ई0 में बनायी गयी थी। यह दो मंजिला भवन है जिसके दरवाजे पर चित्रकारी की गयी है। हवेली में दो बड़े चौक है। हवेली के बाहर, भीतर दरवाजे, पोल, चौक, छत, गोखें पर आकर्षक भिति चित्र बने हुए हैं। यह एक संग्रहालय के रूप में है जहाँ पर्यटक आते रहते है।
- **आनन्दीलाल पोद्धर हवेलीः** इस हवेली का निर्माण वर्ष 1902 में किया गया था। यह दो मंजिला भवन है जिसमें 2 चौक हैं इसके लकड़ी के दरवाजों पर कलात्मक कारीगरी है इसके अलावा यहाँ दीवारों, दरवाजों पर भिति चित्र बने हुए है। इसके संरक्षण के लिए इसे संग्रहालय के रूप में संरक्षित किया गया है।
- **भगत हवेलीः** यह हवेली अपनी पेंटिग के लिए प्रसिद्ध है जो 1900 ई0 के करीब बनाये गये थे। इसमें गणगौर मेला का चित्र अधिक आकर्षक हैं।
- **चेखनी हवलीः** इसे हवेली का निर्माण 1900 ई0 के करीब हुआ था। इसमें ढोला मारू से सम्बन्धित भिति चित्र है।
- **गेयनका हवेलीः** इसका निर्माण 1905 में किया गया था। इस हवेली में देवी, देवताओं एवं हाडी रानी के भिति चित्र है।
- **मिठुका हवेलीः** इसका निर्माण 1910 में किया था इसमें घुड़ सवार, संगीत कलाकार आदि के भित्ति चित्र है।

- **पटोदिया हवेलीः** इसका निर्माण 1903 में किया गया था। सम्पूर्ण हवेली मोर, देवी–देवता के भित्ति चित्र बने हुए है।
- **गोयनका चार हवेलीः** इसका निर्माण 1900 ई0 में किया गया था। यहाँ चार हवेलियाँ एक खुले चौक के चारों तरफ बनी हुई है।
- **कंदवाल हवेलीः** इस हवेली में ढोलमारू एवं रेलगाडी तथा मालवाहक टर्क आदि के भित्ति चित्र है।
- छौछरिया हवेलीः नानास गेट के पास स्थित यह हवेली 1855 में निर्मित की गयी थी जो भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- **सेख सरिया हवेलीः** यह दो चौक की हवेली लाल एवं नीले भित्ति चित्रों के लिए प्रसिद्ध है।
- **जिवराज की हवेलीः** इसका निर्माण 1890 में किया गया था। इसमें गणगौर मेला एवं देशी देवताओं के भित्ति चित्र है।
- **सरावगी हवेलीः** इसक निर्माण 1910 ई0 में किया गया था। इसमें विदेशी लोगों की कार के साथ भित्ति चित्र है।
- **झुन्झुनूं वालों की हवेलीः** इसका निर्माण 1895 ई0 में किया गया था। इसमें गणगौर उत्सव, ब्रह्मा जी, शिव जी आदि के भित्ति चित्र हैं।
- **आठ हवेलीः** यहाँ एक साथ ही आठ हवेलियाँ बनी हुई हैं। जिनका निर्माण 1910 में हुआ था। रख–रखाव के अभाव में यह जीर्ण–शीर्ण अवस्थाये है।
- **शाह हवेलीः** बावड़ी दरवाजे के बाहर स्थित यह हवेली अपने नाम के अनुकूल आकर्षक है। इसे विरासत होटल के रूप में काम में लिया जा रहा हैं। इसमें अनुठी चिकारी एवं भित्ति चित्र है।

मन्दिर

हवेलियों के निर्माण के साथ ही मारवाड़ी सेठों ने अपनी धार्मिक भावनाओं के कारण नवलगढ़ में सुन्दर एवं कलात्मक मन्दिरों का निर्माण करवाया। इन मन्दिरों में शिखर एवं मंडपों का निर्माण किया गया। कई मन्दिर भव्य एवं बड़े है जिनके चारों, तरफ, दीवार एवं खुली जगह है। गोपीनाथ मन्दिर का निर्माण किले की स्थापना के साथ ही महाराजा नवल सिंह द्वार अठारहवीं शताब्दी में ही कराया गया था। यह मन्दिर शहर के मध्य में है तथा अभी भी मन्दिर अपनी नैसर्गिक सौन्दर्य कला से परिपूर्ण हैं। महाराजा गेट के पास स्थित गंगा माता का विशाल मन्दिर है जिमसें विष्णु के अवतार की चित्राकरी हैं। अन्य मन्दिरों में घेर का मन्दिर, कल्याण मन्दिर, नृसिंह मन्दिर, मोर मन्दिर, जगदीश जी का मन्दिर, रानी सती मन्दिर, रामदेवी जी का मन्दिर, महामाया मन्दिर, लक्ष्मी नारायण मन्दिर आदि प्रसिद्ध है। राजस्थान पुरात्व एवं संग्रहालय विभाग– के सर्वेक्षण के अनुसार 30 मन्दिर चिन्हित किये गये है जिनका उचित संरक्षण किया जाना आवश्यक है। इसमें से अनेक मन्दिर रख–रखाव के अभाव में निरन्तर–जीर्ण–शीर्ण अवस्था में होते जा रहे है। इनमें गन्दगी, जंगली घास आदि उगे हुए है तथा दीवार एवं छत से प्लास्टर गिर रहे है। इन मन्दिरों के लकड़ी के दरवाजों, दीवारों एवं छत में भित्ति चित्र बने हुए है।

छतरियाँ

राजस्थान में छतरियों का निर्माण अनेक स्थानों पर किया गया हैं। सामान्य रूप से छतरी में बहुकोणीय छत्र (होम) का निर्माण किया जाता हैं। जो चार या आठ सतम्भों के सहारे बनी होती है। इनका निर्माण एक चबुतरें पर किया जाता है। बडी छतरियाँ एक से अधिक गुम्बदों वाली होती है। इन छतरियों के अन्दर भी सुन्दर चित्रकारी की जीती हैं। नवलगढ़ में राजस्थान पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा ऐसी 12 छतरियों को चिन्हित किया गया 62 है। इन छतरियों का भी रख–रखाव उचित ढंग से नहीं किया जा रहा है। बावड़ी दरवाजे से आगे ग्रैड हवेली के पास एक साथ कई छतरियाँ बनी हुयी है परन्तु इनकी दशा अत्यन्त दयनीय हैं। यहाँ पर जंगली वनस्पति लगी हुई है एवं गन्दा पानी बहता रहता है अतः इन्हें पर्यटकों द्वारा देखना भी कठिन हैं।

जोहड़ एवं कूँवे

कूँवें एवं जोहड़ (तालाब) अर्द्ध मरुस्थलीय शेखावाटी क्षेत्र के लिए अति महत्वपूर्ण स्थल है। इनका निर्माण मारवाडी उद्यमियों द्वारा कराया गया था। कुँवों पर ऊँचे चबुतरे का निर्माण किया गया जिसमें मीनार एवं छतरियाँ भी बनवायी गयी। कूँवों का उपयोग पेयजल के अतिरिक्त सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों के लिए भी किया जाता था। छतरियाँ लोगों के अल्पकालीन विश्राम के लिए भी बनवायी गयी थीं।

जोहड़ या तालाब का निर्माण जल संग्रहण स्थल के रूप में किया गया था। जोहड़ चौकार आकृति के बनवाये गये तथा इनमें सीढ़ियाँ नीचे पानी तक जाती थी। इन जोहडों के चारों तरफ काफी खुला स्थान रहता था जो जल पुनर्ग्रहण का काम करता था। बरसात के पानी से यह जोहड़ के किनारे छतरियाँ भी बनी रहती थी। नवलगढ़ में ऐसे कई जोहड़ बनवाये गये थे। कुछ जोहड़ी के किनारे छतरियाँ भी बनी रहती थी। नवलगढ़ में ऐसे कई जोहड़ बनवाये गये थे जो आज भी विद्यमान है। वर्तमान में इन जोहडों में शहर का गन्नदा पानी इकट्ठा होता है तथा यह लोगों को स्वस्थ वातावरण देने की जगह प्रदुषित स्थल बन गये है। इनका पुराना स्वरूप भी नष्ट हो गया है और गन्दे पानी का अन्यत्र निस्तारण नहीं होने के कारण यह प्रदुषित वायु, मच्छर आदि के स्थल बन गये है।

विरासत संरक्षण समस्या

नवलगढ़ में अनेक ऐतिहासिक भवन एवं विरासत स्थल है जिसके कारण यहाँ अनेक पर्यटक वर्ष पर्यन्त आते है परन्तु इन विरासत भवनों का रख–रखाव उचित ढंग से नहीं हो पा रहा है। इनके रखरखाव के लिए वांछित धन एवं स्वामित्व के अभाव में वे दिन–प्रतिदिन जर्जर अवस्था को प्राप्त हो रहे है। कुल 200 हवेलियों में मात्र 20 हवेलियाँ ही पर्यटकों को देखने के लिए उपलब्ध है। शेष अधिकांश हवेलियाँ वर्षा से बन्द पड़ी है तथ उनके स्वामी उनकी सुध भी नहीं लेते। इन हवेलियों की जाने वाले मार्ग भी कच्चे है तथा वर्षो के पानी से कीचड़ युक्त हो जाते है। इन हवेलियों में विद्युत प्रकाश की भारी व्यस्था नहीं है। कुछ हवेलियों को लोगों ने गिराकर आवासीय भवन बना लिए हैं। मन्दिर जोहड़ एवं कूँवों की दशा और भी खराब है। किसी सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान द्वारा इनके संरक्षण का प्रयास नहीं किया जा रहा है केवल कुछ हवेलियाँ जैसेः मुरारका हवेली, पोद्दार हवेली को संग्रहालय के रूप में विकसित किया गया हैं और गैंड हवेली एक विरासत होटल के रूप में उन्नत है। शहर की बढ़ती आबादी एवं व्यावसायिक गतिविधियों के विस्तार के कारण जमीन की कीमत बढ़ चुकी है अतः इन विरासत स्थलों मंडी एवं अन्य व्यावसायिक गतिविधियाँ स्थापित है। शहर के मुख्य दरवाजे (पोल) के सामने कारवाँ के विश्राम के लिए निर्धारित खुले स्थल में दुकान एवं थड़ियों को निर्माण किया गया है तथा वाहन खड़े रहते है।

नवलगढ़ में पर्यटनों की मुख्य समस्याएँ

नवलगढ़ में विरासत पर्यटन की विपुल सम्भावनाओं के होते हुए भी यहाँ पर अभी वांछित संख्या में पर्यटक नहीं आते है। यहाँ पर पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाओं का नितान्त अभाव है। यहाँ पर पर्यटकों की मुख्य समस्याएँ निम्न है।

- **विरासत स्थलों का रख–रखाव**

उचित रख–रखाव के अभाव में हवेलियाँ, छतरियाँ, मन्दिर आदि विरासत स्थलों की दशा खराब हो गयी है एवं वे अपना स्वरूप खोते जा रहे है। अतः पर्यटकों को इनके वास्तवित कलाकृतियों की छवि देखने को नहीं मिल पाती। अनेक सुन्दर हवेलियाँ अभी भी पर्यटकों को देखने के लिए उपलब्ध नहीं है। हवेलियों के अलावा जोहड एवं छतरियाँ और भी खराब दशा में है। इन्ही सब कारणों से पर्यटकों का वास्तविक स्वरूप देखने को नहीं मिल पाता।

- **विरासत स्थलों के सम्पर्क मार्ग**

विरासत स्थलों को जाने वाल अधिकांश सड़के कच्ची एवं संकरी है। अतः यहाँ वाहन से जाना कठिन है। इन कच्ची सड़कों में पानी के निकास की व्यवस्था नहीं होने के कारण कीचड़ रहता है।

- **विरासत स्थलों के पस गन्दगी**

उचित रख–रखाव के कारण विरासत स्थलों के पास जंगली घास एवं आवारा पशु घूमते रहते है। इससे इनके आस–पास गन्दगी रहती है। ऐसी समस्या मन्दिर एवं छतरियों में अधिक है।

- **प्रचार सामग्री की अनुपलब्धता**

नवलगढ़ में कोई पर्यटक केन्द्र नहीं है अतः यहाँ के दर्शनीय स्थलों की एकीकृत सूचना उपलब्ध नहीं है, जिसमें स्थलों के साथ–साथ गाइउ मैप एवं स्थलों का संक्षिप्त विवरण उपलब्ध हो सके।

- **यातायात समस्या**

दर्शनीय स्थलों को जाने वाले मार्ग पर समुचित यातायात व्यवस्था नहीं है। अतः पर्यटकों को भीड़ वाले मार्ग से जाना पड़ता है जहाँ वाहन खड़े होने से असुविध होती है।

- **सूचना पट्टों की कमी**

शहर में सूचना पट्टों का पूर्णतः अभाव है। सड़कों पर मार्गदर्शक सूचना पट्ट प्रदर्शित नहीं होने के कारण वांछित स्थलों तक जाने में कठिनाई होती हैं।

- **पर्यटन सुविधाओं की कमी**

दर्शनीय स्थलों के पास जनसुविधाओं का अभाव है। इनके अलावा यहाँ अच्छे रेस्टोरन्ट, कॉफी हाऊस आदि की भी कमी हैं। इसके कारण पर्यटकों को असुविधा होती है।

- **आवास की कमी**

नवलगढ़ में पर्यटकों के लिए वांछित स्तर के होटलों की कमी है कुछ हवेलियाँ को विरासत होटल के रूप में परिवर्तित किया जाना आवश्यक है। अभी ग्रैंड हवेली एवं रूप विलास पैलेस ही विरासत होटल के रूप में कार्यरत है। इसी कमी के कारण अधिकांश विदेशी पर्यटक यहाँ रात्रि विश्राम नहीं करतें।

- **वाहन पार्किंग स्थल की कमी**

नवलगढ़ में बाहर से आने–वाले पर्यटकों के लिए पार्किंग व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। अतः वें अपना वाहन मोरारका हवेली के बाहर या परकोटे के पुराने दरवाजें के बाहर खड़ा करते है। व्यवस्थित पार्किंग स्थल के अभाव में पर्यटकों को काफी परेशान होना पड़ता हैं।

- **गाइडों की कमी**

पर्यटक केन्द्र नहीं होने के कारण नवलगढ़ में प्रशिक्षित गाइड़ों की नितानत कमी हैं। प्राप्त सूचना के अनुसार केवल तीन स्थानीय गाइड ही सक्रिय है अतः पर्यटकों को दर्शनीय स्थलों के बारे में जानकारी देने के लिए समुचित व्यवस्था नहीं है।

- **दर्शनीय मार्गों की अनुपलब्धता**

पर्यटकों को विभिन्न विगत स्थलों को जाने के लिए पर्यटन मार्ग का निर्धारण उचित ढंग से नहीं किया गया हैं। अतः पर्यटकों को बहुत से दर्शनीय स्थल देखने को उपलब्ध नहीं होतें।

- **सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की कमी**

पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए स्थानीय कलाकारों के कार्यक्रमों आदि का आयोजन नहीं किया जाता है। केवल विरासत मेंले में या अन्य विशिष्ट प्रयोजन पर भी ऐसे कार्यक्रम आयोजित किया जाता है।

- **स्थानीय कला एवं कारीगरी प्रदर्शन का अभाव**

नवलगढ़ में अभी भी ऐसे कलाकार हैं जो प्राचीन शैली के भित्ति चित्रों, लकड़ी की नक्कासी, चित्रकारी आदि में निपुण है परन्तु नवलगढ़ में कोई भी ऐसा स्थल नहीं है जहाँ इन कारीगरों द्वारा चित्रकारी का सजीव अनुभव पर्यटकों को उपलब्ध हो सके।

विरासत संरक्षण के मुख्य सुझाव

नवलगढ़ में ऐतिहासिक विरासत भवनों का संरक्षण किया जाना अत्यावश्यक है। राज्य सरकार के पुणतत्व एवं संग्राहलय विभाग द्वारा ऐसे स्थलो को चिन्हित किया गया है परन्तु इन सबको पुरात्व स्मारक घोषित किया जाना सम्भव नहीं है। इसके लिए सरकार, गैर सरकारी संस्थान एवंज न सहयोग की आवश्यकता हैं। अतः इन सभी स्मारकों का विस्तृत अध्ययन कर इनके लिए आवश्यक नीति निर्धारण कया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में निम्न सुझाव प्रस्तावित हैं–

- **विरासत संरक्षण क्षेत्र का निर्धारण**

नवलगढ़ में विश्व स्थल पुराने शहर के अन्दर इसके चारों तरफ बिखेरे हुए है। अतः इस सम्पूर्ण क्षेत्र को विरासत संरक्षण क्षेत्र के रूप में अधिसुचित किया जाना प्रस्तावित है। उक्त क्षेत्र का निर्धारण विरासत स्थलों की अधिक सर अधिक उपस्थिति एवं उनकी महत्ता को ध्यान में रखकर किया गया है। इसे मास्टर प्लान में एक अलग योजना क्षेत्र के रूप में दर्शाया गया है। उक्त विरासत संरक्षण क्षेत्र के लिए अलग से नीति निर्धारण किया जाना अतिआवश्यक है। अतः उक्त क्षेत्र के लिए राज्य के पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग द्वारा उचित नीति एवं भवन उपविधियों आदि का निर्धारण किया जाना प्रस्तावित है।

- **विरासत स्थलों का संरक्षण**

सभी हवेलियों का सर्वेक्षण कर उनमें से दर्शनीय हवेलियों को चिन्हित कर उनके संरक्षण हेतु प्रयास किया जाना चाहिए। एसी हवेलियाँ जिनके स्वामी का पता लग सकता है उन्हें अपली हवेलियों के संरक्षण हेतु प्रेरित किया जाये तथा उन्हें विरासत होटल, संग्रहालय आदि का रूप दिया जये।

- ऐसी हवेलियाँ जो वर्षो से बन्द पड़ी है तथा उनके स्वामित्व का पता भी नहीं है या वे उनके रख–रखाव में कोई रूचि नहीं रखते, परन्तु वे पर्यटकों के लिए दर्शनीय है उनका राज्य सरकार द्वारा पुरातत्व स्मारक घोषित कर आवश्यक सुधार कर उनके उपयोग के बारे में निर्णय किया जाना चाहिए।
- इसी प्रकार अन्य स्मारकों जैसेः छतरियाँ, कँवें एवं मन्दिर का भी पुर्ननिर्माण एवं सुधार कार्य किया जाना आवश्यक है।
- नवलगढ़ में जोहड़ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये जल संग्रहण के मुख्य स्त्रोत के रूप में बनवाये गये थे जिसमें वर्षा का पानी भरा रहता था तथा लोग गर्मी से राहत पाने के लिए भ्रमण करने आते थे। यह पक्के तालाब के रूप में बने हुए थे। परन्तु अब इनका स्वरूप बदल गया हैं तथा यहाँ शहर को गन्दा पानी इकट्ठा होकर दुर्गन्ध फैलाता है। अतः यह आवश्यक है कि नवलगढ़ के लिए जल निकास योजना बनाकर उसकी क्रियान्वित की जाये जिससे शहर का गन्दा पानी बाहर निकाले जाने की व्यवस्था हो तथा इन जोहड़ों को अपने पुराने स्वरूप में जल संग्रहण क्षेत्र के रूप में विकसित किया जाये और इनके चारों तरफ रिक्त भुमि को वृक्षारोपण या उद्यान के रूप में विकसित किया जाये।
- विगत भवनों विशेषकर मन्दिर एवं छतरियों के समीप गन्दगी, जंगली झाड़ियों आदि की सफाई कर वहाँ पर वृक्षारोपण एवं सुन्दर पार्क अथवा पार्किंग स्थल विकसित किया जा सकता है। इससे इन स्मारकों का आकर्षक बनाया जा सकेगा।
- भवनों के बाहर एवं अन्दर भले भित्ति चित्रों को जन सहयोग द्वारा आवश्यक सुधार कर उन्हें अधिक सुन्दर बनाये जाने का प्रयास किया जाना चाहिए। नवलगढ़ में ही ऐसे कारीगर उपलब्ध है जो इसक कार्य को भली–भांति कर सकते हैं।
- विरासत स्थलों के समीप खुले स्थल उपलब्ध है। इन रिक्त स्थलों का भी सोन्दर्यीकरण कर उन्हें पर्यटकों के लिए वाहन पार्किंग अथवा क्षणिक विश्राम स्थल के रूप में विकसित किया जाना आवश्यक है।

विरासत पर्यटन हेतु मुख्य सुझाव

नवलगढ़ में विरासत पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए निम्न प्रयास किए जा सकते है।

- **हवेली मार्ग/गली की सौन्दयीकरण**

हवेलियों को जाने वाले अनेक मार्ग अभी कच्चे है तथा वहाँ प्रकाश, जनसुविधा, जल निकास आदि सुविधाओं की कोई व्यवस्था नहीं है। इन्हें पर्यटकों के लिए अधिक आकर्षक बनाये जाने की आवश्यकता है। अच्छी प्रकाश व्यवस्था ये इन्हें ''नवलगढ़ रात्रि'' के रूप में विकसित किया जा सकता है। कुछ मार्ग तो ऐसे है जिनके दोनों तरफ केवल हवेलियाँ ही बनी हुई है। यहाँ निम्न सुधार कार्य किया जा सकता है।

  - सड़कों को पक्का करना
  - प्रकाश की व्यवस्था
  - हवेलियों पर फोकस प्रकाश
  - पर्यटकों का बैठने की बैन्च
  - पेड़, पौधे, फूल, घास आदि लगाना
  - विद्युत तारें को भूमिगत करना
  - जन सुविधाओं का निर्माण करना
  - जल निकास के लिए नालियों का निर्माण

- **स्मारकों पर सूचना पट्ट लगाना**

सभी दर्शनीय स्मारकों पर उनके बारे में सूचना पट्ट लगाया जाना चाहिए जिससे पर्यटकों को उनके बारे में जानकारी प्राप्त हो सके।

- **लाइट एण्ड साउण्ड व्यवस्था**

कुछ हवेलियों में लाइट एण्ड साउण्ड व्यवस्था द्वारा हवेली एवं नवलगढ़ के ऐतिहासिक विरासत स्वरूप को दिखाया जा सकता है।

- **विरासत पर्यटन मार्ग निर्धारण**

पर्यटक विश्व भवनों के कलात्मक स्वरूप एवं उनके भित्ति चित्रों का अध्ययन पैदल चलकर देखना अधिक पसन्द करते है। संयोग से नवलगढ़ कि हवेलियाँ केन्द्रित रूप से विभिन्न दिशाओं में बनी हुई है। उक्त बातों को ध्यान में रखकर विशाल पर्यटन मार्गों का निर्धारण किया जाना आवश्यक है।

- **पर्यटक कार्यालय/जनसम्पर्क कार्यालय की स्थापना**

नवलगढ़ को पर्यटन की महत्ता को देखते हुए यहाँ जन सम्पर्क या पर्यटन कार्यालय स्थापित किया जा सकता है जहाँ पर नवलगढ़ के विरासत स्थलों के बारे में आवश्यक मानचित्र एवं अन्य प्रचार सामग्री उपलब्ध हो सके।

- **वाहन पार्किंग की व्यवस्था**

पर्यटकों के लिए वाहन पार्किंग की व्यवस्था उपलब्ध नहीं है। परन्तु पुराने शहर के दरवाजों के बाहर खुले स्थल उपलब्ध है जहाँ अतिक्रमण हटकर पर्यटकों के वाहन खड़े किये जा सकते है। इसके अलावा अन्या रिक्त स्थलों का भी वाहन पार्किंग के लिए विकसित किया जा सकता है।

- **पर्यटक आवास सुविधा**

वर्तमान में पर्यटकों के रात्रि विश्राम के लिए पर्याप्त व्यवस्था नहीं है। अतः वाणिज्यिक क्षेत्र एवं पर्यटक सुविधा केंद्रों में कुद उच्च स्तरीय होटल बनाए जा सकते है। कुछ हेवलियों को भी विरासत होटल के रूप में विकसित किये जाने की आवश्यकता है।

- **दिशा निर्देश संकेत चिन्ह**

  मुख्य सड़कों पर पर्यटन केन्द्र के बारे में दिशा निर्देशक संकेत चिन्ह लगाया जाना आवश्यक है।

- **प्रशिक्षित गाइडों की व्यवस्था**

  पर्यटकों के लिए पर्याप्त संख्या में प्रशिक्षित गाइडों की व्यवस्था किया जाना भी आवश्यक है।

- **क्राफ्ट बाजार का विकास**

  स्थानीय कारीगरों के सहयोग से पर्यटक स्थलों के समीप क्राफ्ट बाजार विकसित किया जाना चाहिए। इससे पर्यटकों को स्थानीय कला के विकास के साथ ही कारीगरों की आय भी हो सकेगी।

- **प्रसार माध्यमों से प्रचार**

  नवलगढ़ में विरासत पर्यटन के लिए प्रचार–प्रसार साधनों द्वारा नवलगढ़ के विरासत पर्यटन का प्रचार किया जाना चाहिए इससे विदेशी पर्यटक अधिक संख्या में यहाँ आने को प्रेरित होंगे।

- **क्षेत्रीय सम्पर्कता को बढ़ावा देना**

  नवलगढ़ के लिए दिल्ली, जयपुर, बीकानेर आदि शहरों से पैकेज दुर नियोजित किये जाने की आवश्यकता है। वर्तमान में यहाँ छोटी रेल लाइन है अतः इसे बड़ी लाइन में परिवर्तित किया जाना अत्यावश्यक है इससे यह दिल्ली, जयुपर, बीकानेर, जोधपुर आदि शहरों से सीधा जुड़ सकेगा।

- **पर्यटन सुविधा केन्द्र**

  पर्यटन उद्योग को बढ़ावा देने एवं पर्यटकों के लिए आवश्यक सुविधाएं प्रदान करने के उद्देश्य से भू–उपयोग योजना में दो स्थल प्रस्तावित किये गये है। जो क्रमशः झुन्झुनूं बाईपास रोड़ पर नवनिर्मित बस स्टेण्उ के पश्चिम एवं दूसरा सीकर रोड़ एवं प्रस्तावित रिंग रोड़ के चौराहे के पास प्रस्तावित है। इन स्थलों में पर्यटन से सम्बन्धित उपयोग जैसेः होटल, रेस्टारेंट, कैम्पिंग साइट, क्राफ्ट बाजार, पार्किंग स्थल, प्रदर्शनी स्थल, नियोजित बाजार आदि विकसित हो सकेंगे। भविष्य में आवश्यकतानुसार इन क्षेत्रों की विस्तृत योजना बनाने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष

पर्यटन एवं विरासत संरक्षण के क्रियान्वयन के लिए विशेष अध्ययन की आवश्यकता है। अतः इसके लिए पर्याप्त क्षमता वाले तकनीकी विशेषज्ञों से अध्ययन किराकर समुचित विकास योजना बनायी जानी चाहिये जिससे विरासत संरक्षण के साथ ही नवलगढ़ देश–विदेश में एक विरासत पर्यटन केंद्र के रूप में ख्याति प्राप्त कर सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. बी. डी. अग्रवाल, राजस्थान जिला गजेटियर, जयपुर 1978, पृ0 68, 69
2. गोविन्द अग्रवाल, शेखावाटी के भित्ति चित्र एक अध्ययन, मरू श्री पत्रिका, पृ0 38
3. ख्याली राम, शेखावाटी की प्रमुख हवेलियां व उनकी भित्ति चित्रकला
4. रतनलाल मिश्र, राजस्थान के दुर्ग, साहित्य संस्थान, राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर
5. डा. राजेश कुमार व्यास (2009), सांस्कृतिक पर्यटन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी
6. सुरजन सिंह शेखावत, नवलगढ़ का संक्षिप्त इतिहास पृ0 15–16, पृ0 21, पृ0 103–107, पृ0 109–113, पृ0 108–109
7. डॉ0 एल. आर. भल्ला (2014), राजस्थान का भूगोल, कुलदीप पब्लिशिंग हाउस, जयपुर

❖◆❖